ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

अ.क्र.	शीर्षक	संशोधक	पृ.क्र.
96)	21 वीं सदी की महानगरीय कहानियों में जातिव्यवस्था का चित्रण	प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर	247
97)	''कृष्णा अग्निहोत्री के कहानी साहित्य में महानगरीय बोध''	डॉ. संजय विक्रम ढोडरे	249
98)	'21 वीं सदी की चुनौतियों को उजागर करती डॉ.मधु धवन की कुछ कहानियाँ'	डॉ. शेखर घुंगरवार पी.	251
99)	इक्कीसवीं शताब्दी की कहानियों में महानगरीय समस्याएँ	प्रा. डॉ. रेविता कावळे	253
100)	गिरीराज किशोर की कहानियों में महानगरीय जीवन-बोध	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	256
101)	वैश्विकरण एवं बाजारीकरण के परिप्रेक्ष्य में महानगरीय बोध (कहानियों के संदर्भ में)	प्रा.माने एस.एस.	258
102)	संजीव की कहानियों में महानगरीय जीवन	प्रा. घुलेश्वर गोविंदराव डॉ.एम.डी.इंगोले	260
103)	'बारिश की रात' कहानी में महानगरीय बोध	प्रा.कासरलावाड एस.जी.	264
104)	'मोहनदास' कहानी में चित्रित महानगरीय बोध	प्रा.युवराज राजाराम मुळये	266
105)	21 सदी के कहानियो में महानगरीय बोध: परिभाषा एवं स्वरूप	अनुराधा	268
106)	नासिरा शर्मा जी की कहानियों में महानगरीय बोध	शेख परवीन बेगम	270
107)	'तलाश' (कहानी संग्रह) में महानगरीय बोध	इबरार खान अबू हूरैरा	272
108)	इक्कीसवीं सदी की महिला लेखिकाओं की कहानियों में महानगरीय जीवन	राठोड संजीवनी जनार्धन	275
109)	महानगरीय जीवन में सर्वहारा वर्ग (ईश्वर मर चुका है- वंदना शुक्ल, कहानी के संदर्भ में)	टी. घनश्याम विठ्ठल	277
110)	'हिस्से की रोटी' कहानी संग्रह में महानगरीय बोध	संजय	280
111)	21 वीं सदी की कहानियाँ : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में महानगरीय बोध	नकिनेकंटि नागराजू	282
112)	महिला लेखिकाओं की कहानियों में महानगरीय विमर्श	तायडे राजाराम बाबुराव	284
113)	राकेश भारतीय की कहानियों में महानगरीय बोध	प्रदीप सोपान खिल्लारे	286
114)	उषा प्रियंवदा की कहानियों में महानगरीय बोध	व्यंकटेश श्रीवेशी	288
115)	मालती जोशी की कहानियों में महानगरीय बोध	डाकोरे कल्याणी	289
116)	महानगरीय बोध और 'जान से प्यारे' एकांकी	डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार	291
117)	संत्रास, कुंठा, घुटन और महानगरों का अम्बेडकरवादी लेखन	डॉ. कर्मानंद आर्य	294
118)	महानगरीय जीवन और नैतिक मूल्य	डॉ. पी. हरिराम प्रसाद	299
119)	21 वीं शती में जनसंचार माध्यम की शिकार : महानगरीय व्यवस्था	लेफ्ट.प्रा.डॉ.अनिता शिंदे	302
120)	'महानगरीय बोध अवधारणा एवं स्वरुप'	डॉ. भदरगे एस.एन.	304
121)	महानगरीय जीवन बोध : स्वरूप एवं संदर्भ	प्रा. शाहू गणपतराव	306
122)	'अन्य से अनन्या' में महानगरीय बोध	प्रा. विश्वनाथ जंगीटवार	308
123)	प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या में' महानगरीय बोध	प्रदीप पंडित	310
124)	'कितने शहरों में कितनी बार' संस्मरण में चित्रित महानगरीय बोध	लाऊरि विजयलक्ष्मी	312
125)	दूरदर्शन : महानगरीय मध्यम वर्ग की महिलाएँ	शरद करकनाळे	315
126)	महानगरीय अर्थतंत्रः परिवर्तित प्रवृत्तियाँ	रेणुका के.	316
127)	डॉ. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में महानगरीय बोध	एम. सुधाकर	318

संजीव की कहानियों में महानगरीय जीवन

प्रा. घुलेश्वर शिवराज गोविंदराव
नूतन महाविद्यालय,सेलू,
ता.सेलू,जि.परभणी

डॉ.एम.डी.इंगोले
संत जनाबाई महाविद्यालय,गंगाखेड,
ता.गंगाखेड,जि.परभणी.

सारांश :-

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज के हर घटना का चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं में करता है। इससे समाज को एक दिशा मिलती है। संजीव जी 21 वी सदी के प्रमुख कथाकार के रुप में उभरकर आये है। इनका रचना संसार बहुआयामी है। संजीव जी के कहानी साहित्य में महानगरीय युगबोध का चित्रण हुआ है। इनकी कहानियों में प्रेमचंद की विचारधारा का प्रभाव देखने को मिलता है। हम ऐसा कह सकते है कि, प्रेमचंद जी की कहानी परंपरा को आगे बढ़ाने का काम संजीव जी ने किया है। संजीव जी ने अपनी कहानियों में महानगरों की समस्याएँ, वहाँ का विषाक्त वातावरण, रहन-सहन, अपराध, अन्याय, अपरहण, बस्ती झोपडियों की समस्याएँ आदि का सजीव चित्रण उनके कहानी साहित्य में हुआ है। अपने कहानी साहित्य से लोगों को यह बताया कि, महानगरों का जीवन उपर से भले ही चमक-धमक भरा दिखाई देता हो लेकिन अंदर से उतना ही विषाक्त, दमघोटू, आत्मकेंद्रित, कृत्रिमता, नकलीपन से भरा पडा है।

प्रस्तावना :-

साहित्य समाज का आईना होता है। समाज में जो भी घटनाएँ घटित होती है, उसका चित्र साहित्य में देखने को मिलता है। साहित्यकार जिस समाज संस्कृति, प्रदेश, गाँव से आया है, साहित्यकार ने जो जीवन में देखा है, अनुभव लिया है, उसे व्यक्त करने का माध्यम साहित्य है। कहानी विधा साहित्य में सबसे प्रचलित विधा है। कहानी विधा को हिन्दी साहित्य में पहचान दिलाने का काम प्रेमचंद जी ने किया और आधुनिक काल में उनकी विचारधारा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का काम संजीव जी ने किया है। अपने जीवन में संजीव जी ने दस कहानीसंग्रह लिखने का काम किया। उनके कहानी साहित्य में समाज का पीछड़ा वर्ग, मजदूर, आदिवासी, नारी जीवन, जातिव्यवस्था जैसी समस्याओं को स्थान मिला है। उनका बचपन गाँव से जुड़ा है तो रोजी-रोटी के लिए शहर और महानगरों के साथ। उनके कहानियों में गाँव और महानगरों में हो रहे अन्याय का विरोध किया है, तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

संजीव जी की कहानियों में महानगरीय जीवन की भागदौड से लुप्त हो रहे मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का काम आपके साहित्य में हुआ है। रामदरश मिश्रा जी महानगरीय जीवन को लेकर कहते है – "लोग समझ लेते है कि, शहर का अर्थ होता है समृद्धि तो थोडे से लोगों के लिए है। यह शहर मिलवाले बडे-बडे व्यापारी, नेता, वकिल, डॉक्टर इन्ही का ही तो है, बाकी लोग तो शहर के है, शहर के शिकंजे में पिसते हुए शहर न जाने कितनी तरह से इन्हे नाच नचाता है। गाँव में कुछ खाते-पीते लोग है, कुछ अभावग्रस्त। यहाँ तो अभाव के न जाने कितने चेहरे है"[1] संजीव जी ने भी अपने कहानियों में महानगरीय जीवन में बढ़ते आतंक, विषाक्त वातावरण, हमारी आँखो के सामने अन्याय, अपहरण, खुन-खराबा का चित्रण किया है। कोई भी व्यक्ति इन हालातों का सामना नही कर पाता। उसने खद को एक परिवार में बंदी बना रखा है। विरोध करने से संकट उसके उपर भी आ सकते है और उस समय व्यवस्था उसका साथ अन्त तक नही देगी। व्यवस्था ने उसे अलग कर दिया है। प्रस्तुत शोधलेख में संजीव की कहानियों में व्यक्त महानगरीय जीवन की समस्याओं, भाव-भावनाओं एवं परिस्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

पद्धतिः-

प्रस्तुत इस शोध विषय के सन्दर्भ में बहुत से कहानीकारों, साहित्यकारों ने महानगरीय जीवन के बारे में अपना मन्तव्य और विश्लेषण प्रकट किया है। साहित्य विद्वानों के विचारों और संजीव जी के कहानियों का सहारा लेकर इस विषय का विवेचन करने का प्रयास किया गया है। इस शोधलेख के लिए विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, कथनात्मक एवं चिन्तनात्मक पद्धति को यथास्थान अपनाया है।

उद्देश्यः-

प्रस्तुत शोधलेख के निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. संजीव जी की कहानियों का महानगरीय बोध की दृष्टि से अध्ययन करना।
2. कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना।

ISSN : 2394-2266

3. महानगरीय जीवन की समस्याओं का अंकन करना।
4. संजीव जी की कहानियों की भाषा की अभिव्यक्ति की दृष्टि से अध्ययन करना।

महत्त्वः-

हिन्दी साहित्य में कहानी विधा सबसे प्रचलित विधा है। समकालीन कहानीकार के रुप में संजीव जी का स्थान सर्वोपरी है। उनकी कहानियों में सामान्य जनता के दुख-दर्द, हो रहे शोषण का चित्रण किया है।

महानगरीय जीवन से जुड़ी हुई उनकी कहानियों में महानगरीय जीवन का जीता-जागता चित्र प्रस्तुत किया है। आज आधुनिक युग में भी लोग गाँव को छोड़कर शहर तथा महानगरों की ओर अपने कदम बढ़ा रहे है। महानगरीय जीवन की चमक-धमक भरी दुनिया, पैसों का लालच, भौतिक सुख-सुविधाएँ आकर्षित कर रही है। लेकिन शहरों में आने के बाद सारी आशाएँ टूट जाती है, यहाँ का विषाक्त वातावरण, शोषण का जाल, रोजी रोटी, मकान की समस्याओं के जाल में गुंथ जाता है, फिर उसे अपने गाँव की याद आने लगती है। इस बारे में रामदरश मिश्र कहते है –

> **"जब मैं शहर गया तब रास्ते फट गये**
> **जब मैं गाँव लोटा तब रास्ते समेट गये।"**

इस प्रकार संजीव जी ने भी अपने कहानियों में महानगरीय जीवन की सत्यता को बखुबी ढंग से चित्रित किया है। इस व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज उठाने का काम भी किया है।

➢ **संजीव जी की कहानियों में महानगरीय जीवन :-**

संजीव जी की कहानियों में अपने गाँव को छोडकर महानगरों में पढ़ाई करने आये छात्रों की समस्याओं का चित्रण कहानी के माध्यम से किया है। 'अपराध' नामक कहानी में आज़ाद भारत के महानगरीय जीवन के भ्रष्ट तथा शोषणकारी व्यवस्था को बदलने की बात इस कहानी में की है। कहानी का नायक उच्च वर्ग का है। उसकी मुलाकात कॉलेज में निम्नवर्ग के संघमित्रा और शचिन से होती है। संघमित्रा और शचिन की कोई गलती न होने के बावजूद भी बडे-बडे इल्ज़ाम लगाकर उन्हे जेल में बंद किया जाता है। यह दोनों आम आदमी के लिए भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज उठाते है तो उन्हे यहाँ की व्यवस्था टेररिस्ट घोषित करती है। कहानी का नायक सिद्धार्थ उनके प्रति सहानुभूति दिखाता है और अपने पिता को कहता है - "शचिन अपराधी नहीं है, मानवता के प्रति पूरी तरह निष्ठावन युवक है।"[2] लेकिन इस महानगरीय जीवन में पढ़ने आये छात्रों का कोई भी साथ नहीं देता। यहाँ की कानून व्यवस्था पूरी तरह बीक चुकी है, जिसके पास धन-दौलत है उसकी यह व्यवस्था बन गई है। कहानी के आखिर में संघमित्रा और शचिन को फाँसी दी जाती है। मतलब इस आज़ाद भारत देश में पढ़े-लिखे नौजवान अगर समाज की बुरी व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज उठाते है तो उनकी आवाज बंद करने का काम महानगरीय व्यवस्था कर रही है।

'शिनाख्त' कहानी में भी कहानीकरा ने पुलिस व्यवस्था किस तरह कॉलेज के बेगुनाह छात्रों को परेशान करती है, इसका चित्रण किया है। कहानी में कोयला खदान के ठेकेदार के बेटे सत्यनारायन सिंह के इशारे पर पुलिस नक्सली कहकर छात्रों को परेशान करती है। सत्यनारायन सिंह छात्रावास में भर्ती हुए नये लड़कों की रॅगिंग लेता है। जो एक आधुनिक जीवन में महानगरीय जीवन की समस्या बन गई है। संजीव जी के हर कहानी में मौलिकता देखने को मिलती है। इस कहानी में भी रॅगिंग की समस्या के साथ निम्न वर्ग के लड़के किस तरह पूँजीपति लड़को की मौजमस्ती, उनकी चमक-धमक भरी दुनिया का शिकार होते है, इसका यथार्थ चित्रण कहानी में हुआ है।

'ब्लैक होल' कहानी भी छात्रों के जीवन से जुड़ी है। पिता दफ़्तर में क्लर्क का काम करते है लेकिन पत्नी की इच्छाएँ बेटा पूरी करेगा इस तरह की अपेक्षा रखी जाती है। उसके भावनाओं की कुछ कद्र नहीं होती। अपनी माँ के कठोर अनुशासन में वह अपनी वार्षिक परीक्षा देकर घर नहीं लौटता बल्कि आती है उसकी लाश। स्पष्ट है कि, महानगरीय जीवन में पढ़ाई में होड लग चुकी है। एक छात्र का असफल होना उसके दिमाग का ब्लैक होल बनना ही है।

➢ **महानगरीय जीवन में मजदूरों पर अन्याय-अत्याचार का चित्रण :-**

महानगरीय जीवन हर किसी आदमी को लुभाता है। मजदूर भी अपना छोटा सा गाँव छोड़कर महानगरों में आकर बसते है। यहाँ आने के बाद उन्हे अलग-अलग समस्याओं का सामना करना पडता है। संजीव जी ने अपने कहानियों में मजदूरों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार, शोषण के चित्रण को विषय बनाया है।

'भूखे रीछ' इस कहानी में रामलाल नाम व्यक्ति सामाजिक भेदभाव के कारण गाँव छोडकर कोलियार शहर में आकर कारखाने में मजदूर का काम करता है। कारखानों में साहबों का वेतन तो बढ़ जाता है पर मजदूरों

ISSN : 2394-2266

का नहीं। इस बारे में वह कहता है - "मजदूरों का कोई बाप नहीं, सरकार, पुलिस, अदालत, कानून सब साहबों का है।"[3] रामलाल वहाँ की व्यवस्था के कारण लालची बन जाता है। कभी वह मास्टर का तो कभी दलालों का साथ देता है। पैसा न होने के कारण और नौकरी बचाने खातिर बेटी को साहबों के हाथों में सौप देता है।

'चुनौती' कहानी का कथानायक कामताराय एक कारखाने में मजदूर मिस्त्री का काम करता है। कारखाने में जपानी मशिने लगवाकर मजदूरों को कम करने की साजिश के खिलाफ़ आवाज उठाता है। कामताराथ प्रधानमन्त्री का भाषण सुनता है – "हमें रोजगारी और विकास दोनों में से एक को ही प्राथमिकता देनी होगी, यदि आप रोजगार चाहते है, तो विकास नहीं और यदि विकास चाहते हो तो रोजगार का.....।"[4] प्रधानमन्त्री के विचारों से स्पष्ट है कि, मजदूरों का इसमें क्या कसूर जो हमें नौकरी से निकालकर मशिने लगवा रहे है। स्पष्ट है कि, आज मशिनों और तंत्रयुग का जमाना है। नये-नये तरिके से अनुसंधान हो रहा है। हर जगह गतिशिलता को प्रधानता दी जा रही है। मशिनों के कारण मजदूरों को काम से निकाला जा रहा है। देश का विकास जरुर होना चाहिए, लेकिन मजदूरों की रोजी-रोटी छिनकर नहीं क्योंकि विकास इन्सान के लिए ही है। इसे ध्यान में रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

'हलकनामा' कहानी में भी फैक्टरी मालिक के शोषण तंत्र में जकड़े मजदूरों की वेदना को कथ्य बनाया है।

➢ **महानगरीय जीवन में नौकरी की समस्या :-**

'किस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का' इस कहानी का मूल आशय आज़ाद भारत के पढ़े-लिखे युवकों की दास्तान है। बहुत सारी उपाधियाँ (डिग्री) होने के बावजूद भी दर-दर भटकने पर भी महानगरों में नौकरी नहीं मिलती। कहानी के नायक को पियरलेस बीमा कंपनी का एजेंट बनना पडता है, यह उसकी मजबूरी है। संजीव जी इस बारे में लिखते है – "उसी तरह जैसे स्टेशनों पर कुली और तीर्थस्थानों में पंडे एक ही आदमी पर अपना अपना हक जताते है।"[5] इसी तरह इन बीमा कंपनियों के एजेंट की बात है।

'फूटबॉल' इस कहानी में भी आज समाज में प्रतिभा और योग्यता के उपर पैसा और पहचान हावी हो रही है, इसको कहानी का विषय बनाया है। कहानी का पात्र सोमनाथ ने भी अपने जीवन में जो उपाधियाँ (डिग्री) प्राप्त की है, वे मेहनत, परिश्रम करके प्राप्त नहीं की बल्कि पैसों के बल पर पहचना से प्राप्त की है। वह जब कारखानों में नौकरी पर लगता है तब मजदूरों का शोषण करता है। इतना ही नही नौकर भरती के लिए पन्द्रह हजार की माँग करता है। इससे स्पष्ट है कि, महानगरीय जीवन में जिनके पास पहचान और पैसा है उनकी ही चलती है बाकी सब बैकार है।

➢ **महानगरीय जीवन में महिलाओं का शोषण :-**

'धनुष टंकार' इस कहानी में कारखानों में अस्थायी रुप से काम करती सुरसती नामक मजदूर महिला का चित्रण किया है। जब इस महिला पर अन्याय किया जाता है तो वह कारखानों की व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज उठाती है। एक बार मुंशी उसपर अत्याचार करता है तो उसे जेल भिजवाती है। इस कहानी की औरत अनपढ़ होकर भी मजदूरों का नेता बनती है। जब वह अनशन पर बैठती है, तब उसका अनशन तोड़ने के लिए कारखानों की व्यवस्थाद्वारा राजनैतिक व्यक्तियों का सहारा लिया जाता है। नेता कहते है – "आपकी एकता आपके संघर्ष के सामने आज मैनेजमेंट को झुकना पडा है। न केवल मजदूरी में डेढ़-डेढ़ रुपये का इजाफा हुआ है बल्कि निकाले गये दस मजदूरों को लिया गया है।"[6] स्पष्ट होता है कि, कारखानों के मालिक, ठेकेदार, नेता यहाँ की व्यवस्था सब मिली-जूली है। इसके खिलाफ़ सब मजदूरों ने मिलकर आवाज उठानी चाहिए।

'दुश्मन' नामक कहानी में झोपडपट्टी में रहनेवाली दो निम्नवर्गीय स्त्रियों सत्तो और दुर्गी की कहानी है। सभ्य समाज इन्हे हेय दृष्टि से देखता है। कहानी में सूदखोर भूलनसिंह द्वारा निम्नवर्गीय दुर्गी का शोषण का चित्रण भी हुआ है।

➢ **महानगरों की यातायात की समस्या :-**

'ट्रॅफिक जाम' इस कहानी में तंत्रयुग के विकास के कारण नई व्यवस्था, साधनों को हमने अपनी सुविधा के लिए बनाया है, लेकिन इन तकनीकी चिजों के पीछे हर कोई भाग रहा है। इसके कारण बहुत सारे संकट निर्माण हो जाते है। इस कहानी के द्वारा संजीव जी ने ट्रॅफिक जाम होने पर सामान्य लोगों को किन कठीन परिस्थितियों का समाना करना पड़ता है, इसका चित्रण कहानी में किया है। डिलीवरी केस, बीमार आदमी, परीक्षा के लिए जानेवाले छात्र इन सभी को किस तरह ट्रॅफिक जाम से परेशानियों का सामना करना पड़ता है इसका चित्रण कहानी में किया है।

ISSN : 2394-2266

➢ **महानगरीय व्यवस्था का चित्रण :-**

'धुआँता आदमी' इस कहानी में एक आदमी शहरी जीवन से जुड़े हुए कारखानों के एम.डी., समाज सेविका, फिल्म कलाकारों, पुलिस, डॉक्टर, आम स्त्री का पर्दाफाश करता है, तो यह व्यवस्था उसे खतरनाक मानकर काल कोठरी में बंद करती है।

➢ **महानगरों की राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण :-**

भूमिका इस कहानी में आज़ाद भारत के पूँजीपति तथा स्वार्थी नेताओं का चित्रण किया है। जो हम सभी में से कुछ लोगों को खरीद लेते है। बाद में हमारे उपर ही अन्याय-अत्याचार करवाते है। शहर की बस्ती को आग लगाई जाती है, तो दूसरी तरफ सहानुभूति दर्शाते है। ऐसी राजनीति की व्यवस्था के बारे में लेखक कहते है – "बिना टिकट रैली के नाम पर फोकट में शहर घूम आना पारटी धाँस जमाकर ट्रकवालों, दूकानदारों, मदिरालयों, रंडियो से पैसे झाड लाना। लाठी बल्लम, छूरा, बम की बदौलत बूथ कैप्चर कर इलेक्शन जीत लेना और फिर इन्ही के खिलाफ़ लिच्चर फेंक आना राजनीति है। तो हम साले किस लीडर से कम है।"[7] स्पष्ट है कि, शहरी भागों में नवजवान लोगों को गुन्डो के रुप में इस्तेमाल करके अपनी राजनीति मजबूत करने का काम किया जाता है।

'नेता' इस कहानी में कहानीकार ने आधुनिक महानगरीय जीवन के नेता को हमारे सामने रखा है। जब कारखाने में फर्निस की आग में जलकर एक मजदूर की मौत होती है, तब सारे मजदूर इसके खिलाफ़ आवाज उठाते है। मजदूरों का साथ देने के बहाने अलग-अलग मजदूर यूनियन के नेता भी शामिल हो जाते है। दिग्विजय बाबू यूनियन लिडर है वे मरे हुए मजदूर के घर जाकर जवान लडकियों का भरा-भरा यौवन सलोनापन देखकर उनके प्रति आकर्षित होते हुए कहते है – तुम्हे नौकरी दिलाने का जिम्मा मेरा रहा तुम मेरी पी.ए. का काम तब तक देखो, चाहे तो कल से ही..... हाँ..... नाम और क्वालिफिकेशन तो बतया नही तुमने....?[8] लेकिन ममता लड़की इनकी सहानुभूति नही चाहती। इससे स्पष्ट होता है कि नेता लोगों की कथनी और करनी में अंतर है। जनता को झूठा आश्वासन देना जैसे ही कुर्सी मिलती है, अपना स्वार्थ पूरा करते है। ऐसे स्वार्थी नेताओं के बारे में हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबंध में लिखते – "आज समाज को राजनेता की आवश्यकता नहीं जननेता की आवश्यकता है।"

निष्कर्ष :-

हम कह सकते है कि, संजीव जी के कहानी साहित्य में 21 वी सदी के महानगरीय जीवन बोध का चित्रण हुआ है। महानगरीय जीवन में जो समस्याएँ होती है जैसे मिलमालिकों द्वारा मजदूरों का शोषण, पढे-लिखे नवयुवकों की समस्याएँ, बेरोजगार युवकों की समस्याएँ महिलाओं का शोषण, यातायात की समस्याएँ, बस्ती झोपड़ियों की समस्याएँ, मानवीय जीवन मूल्यों के होनेवाले ह्रास का चित्रण, महानगरों की राजनीतिक अव्यवस्था, मिलावट, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का अंकन संजीव जी की कहानियों के विषय बन गये है। कहानीकार ने जनता को सतर्क किया है कि महानगरीय जीवन किस तरह विषाक्त बन गया है, इस ओर भी पाठकों का मन आकर्षित किया है।

संदर्भ ग्रंथसूची:-

1. जाधव, डॉ.सुब्राव - रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम, पृ.-198
2. संजीव – तीस साल का सफ़रनमा, पृ.-20
3. वहीं – पृ. - 61
4. संजीव - भूमिका और अन्य कहानियाँ, पृ - 13
5. संजीव – तीस साल का सफ़रनामा, पृ. - 66
6. संजीव - आप यहाँ है, पृ. – 13.
7. वही, पृ – 26
8. संजीव – दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृ. - 82

●●●

ISSN : 2394-2266